REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 6 | MARCH - 2018

सामाजिक विज्ञान के रूप में भूगोल के कार्य

Dr. Satyabir Yadav
Head, Department of Geography ,
Govt. Collegefor Women, Pali (Rewari).

प्रस्तावना :

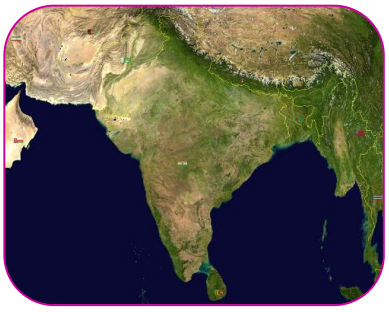

द्वितीय विश्व युद्ध तक भूगोल को धरातल, उच्चावच्च जलवायु, पर्वत, मार्ग, मिट्टी, वनस्पति, बन्दरगाहों, नदियों से सम्बन्धित सामान्य ज्ञान देने वाले विषय के रूप में जाना जाता था। ज्ञान विकास करण में अनेक दार्शनिक एवं क्रिया पद्धति सम्बन्धी समस्यायें सामने आईं क्योंकी भूगोल का विकास क्रमबद्ध विषय से रूप में नहीं हुआ था।

दो जर्मन विद्वानों अलैग्जैन्डर वान हम्बोल्ट (1790–1859) तथा कार्ल रिटर (1779–1859) का योगदान महत्वपूर्ण है तथा इन दोनों को आधुनिक भूगोल का संस्थापक माना जाता है। हम्बोल्ट के अनुसार भूगोल का सम्बन्ध प्रकृति के अध्ययन से है। अन्य सभी क्रमबद्ध विज्ञान चाहे प्राकृतिक हों या जैविक वे सभी पृथ्वी की घटनाओं, स्वरूप, पशुओं, पौधों, मिट्टियों, जीवाश्मों का अध्ययन प्रक्रिया के सम्बन्ध में करते है। लेकिन भूगोल का सम्बन्ध व्यक्तिगत रूप से उनकी प्रक्रिया के इन सभी तथ्यों से एक साथ सहसम्बन्धित है जैसा की सामान्यतः वे किसी क्षेत्र में पाये जाते हैं।

"Geography is concerned with the study of nature. All other systematic sciences, whether natural or bitoic, are concerned with earth phenomena, study the form constitution and process of individual animals or plants, soils, objects or fossils. But geography is concerned with all these objects as they exist together related to each casually in an area."

रिटर के अनुसार : ''भूगोल वह विज्ञान है जिससे पृथ्वीतल का अध्ययन मानव के घर के रूप में किया जाता है।''

भूगोल के विकास की प्रारम्भिक अवस्था में इसे केवल सामान्य ज्ञान माना जाता था, अविकसित देशों में भूगोल को अभी भी नियोजन एवं विकास की प्रक्रिया से नहीं जोड़ा गया है। सामाजिक विज्ञान के रूप में भूगोल का शोध कार्य भी केवल पुस्तकालय तक सीमित रहता था। वास्तव में समाज के कल्याण के क्षेत्रों में भूगोलवेताओं का बहुत कम योगदान रहा तथा भूतकाल में वे इसके लिए कोई वैकल्पिक योजना प्रस्तुत नहीं कर सके। पिछले 60 वर्षों में भौगोलिक साहित्य की पुस्तकों तथा अनुसंधान परियोजनाओं का प्रकाशन सार्वजनिक तथा निजी संस्थाओं द्वारा किया जाता है। पिछले कुछ वर्षों में भूगोलवेताओं ने भूगोल के पाठ्यक्रम निर्धारण में सामाजिक कल्याण को महत्वपूर्ण स्थान दिया है जिसे समाज के विकास के लिए उपयोगी बनाया जा सके। आज सामाजिक विज्ञान के रूप में भूगोल के कार्य बहुत महत्वपूर्ण तथा चुनौती भरे हैं। आज भूगोलवेता पर्यावरण प्रबन्ध और प्रदूषण के प्रति स्थानिक, प्रादेशिक तथा विश्व स्तर पर पर्यावरण की जानकारी का प्रमुख श्रोत बन रहे हैं और पर्यावरण प्रदूषण की समस्याओं के समाधान के लिए साहसिक कार्य कर रहे हैं। समाज के वास्तविक विकास के लिए भूगोल एक सामाजिक विज्ञान के रूप में महत्वपूर्ण मार्ग दर्शक है। अब भूगोलवेता

समाज की समस्याओं को अपने शोध के क्षेत्र में शामिल कर रहे हैं ताकी समाज की समस्याओं तथा प्रादेशिक असमानताओं को कम करके उनका हल निकाला जा सके। विश्व में भूगोलवेता अपने आप को समाज की समस्याओं से जोड़ते हुए स्थानिक तथा विश्वस्तर पर विश्लेषण करते हुए उनके समाधान के लिए प्रयास कर रहे हैं।

भूगोलवेता समाज से जुड़ी अनेक समस्याओं के तथ्यों का वर्णन करते हुए उनकी व्याख्या को स्पष्ट करते हैं। अब भूगोलवेता स्थानिय, प्रादेशिक तथा विश्व स्तर पर सामाजिक तथा आर्थिक असंतुलन के कारण तथा निवारण की खोज कर रहे हैं। भूगोलवेता अपनी योजनाओं का मूल्यांकन विश्लेषण के आधार पर करते हैं तथा योजनाओं के संतुलित विकास के लिए उपयुक्त योजना प्रस्तुत करते है। उदाहरण के लिए यदि कोई प्रादेशिक स्तर पर हरियाणा में सामाजिक–आर्थिक विकास स्तर में प्रादेशिक असंतुलन पर शोध करता है तो उसे प्रोदेशिक असंतुलन के तथ्यों का वर्णन तथा व्याख्या करनी पड़ती है अर्थात् शोधकर्ता हरियाणा में भौतिक संसाधन, मानव संसाधन, तथा सांस्कृतिक संसाधनों का विश्लेषण के आधार पर मूल्यांकन करता है तथा प्रादेशिक स्तर पर उनके सामाजिक तथा आर्थिक विकास के स्तरों (levels) को उचित प्रविधियों द्वारा ज्ञात करता है। सामाजिक तथा आर्थिक संकेतकों के आधार पर भौगोलिक प्रविधियों द्वारा हरियाणा में सामाजिक आर्थिक विकास के स्तरों में प्रादेशिक असंतुलन ज्ञात किया जाता है। तत्पश्चात योजना के संतुलित विकास के लिए उपयुक्त योजना प्रस्तुत की जाती है। इसी प्रकार से भूगोलवेता समाज की अनेक समस्याओं से जुड़कर उनके समाधान के प्रयास कर रहे हैं।

भारत जैसे विशाल देश में अनेक प्रादेशिक असमानताएँ हैं। कृषि विकास, औद्योगिक विकास, सामाजिक विकास, आर्थिक विकास, सांस्कृतिक विकास में प्रादेशिक विषमताएँ (Disparities) पाई जाती हैं। भारत में अमीर और गरीब के बीच खाई चौड़ी होती जा रही है। भारत में लगभग 30 प्रतिशत जनसंख्या अब भी गरीबी रेखा से नीचे निवास कर रही है। भारत में ज्यादातर आर्थिक क्रियायें बड़े नगरों तक ही सीमित हैं जबकि लगभग 70 प्रतिशत जनसंख्या गावों में निवास करती है। अत्यधिक विकसित देशों जैसे यू. एस.ए., कनाड़ा, आस्ट्रेलिया, ब्रिटेन, आदि में भी स्थानिक स्तर पर अमीरी और गरीबी का स्तर असमान है। किसी प्रदेश में लोगों का जीवन स्तर ऊँचा है तो कहीं पर निर्धनता है कहीं पर स्वच्छ बस्तियां हैं तो कहीं पर गन्दी बस्तियां हैं। अतः नियोजनकर्ताओं को समाज के सभी वर्गों को सामाजिक सुविधाएं प्रदान करते समय भूगोलवेताओं के साथ विचार–विमर्श करना चाहिए। स्थानिक, प्रादेशिक तथा विश्वस्तर पर अत्यधिक बढ़ती जनसंख्या की विभिन्न सामाजिक, आर्थिक और नियोजन की समस्याओं के समाधान के लिए भूगोलवेता व्यवहारिक और उपयोगी शोध परियोजनाओं को प्रस्तुत कर अपना प्रभावी योगदान देते हैं। भूगोलवेता भौतिक और मानव पर्यावरण का अध्ययन करता है। वह संसाधनों का भी अध्ययन करता है। सामाजिक विज्ञान के रूप में भूगोल का कार्य समाज में व्याप्त बेरोजगारी की समस्या के समाधान के लिए भौगोलिक ज्ञान का उपयोग करना है। आधुनिक युग में दूरस्थ संवेदन तथा भौगोलिक सूचना तंत्र (Remote sensing and Geographic Informations system) जैसी भोगोलिक तकनीकों के विकास होने से भूगोलवेताओं को सरकारी तथा निजी संस्थाओं में नौकरियां मिलने लगी हैं।

प्राकृतिक संसाधन प्रबन्ध में भौगोलिक सूचना तंत्र तथा दूर संवेदी तकनीकों की सहायता से प्राकृतिक संसाधनों का उचित प्रबन्ध किया जाता है तथा भूगोलवेताओं को अनेक सरकारी व गैर सरकारी संस्थाओं में अच्छे वेतन के साथ नौकरियां प्रदान की जाती हैं।

रूसी विद्वान ड्रेवनोवस्की (1974) ने समाजवादी भूगोल के उद्देश्य की व्याख्या करते हुए इसे विश्व बन्धुत्व की भावना से ओतप्रोत बताया। उसके अनुसार समाजवादी भूगोल मानवीय गुणों जैसे सद्भाव, प्रेम, सहानुभूति तथा मानव कल्याण की भावना से प्रेरित है। विभिन्न प्रकार के भेदभाव तथा असमानता को समाप्त करना तथा मानवीय जीवन स्तर का विकास करना ही इसका मुख्य उद्देश्य है। ड्रेवनोवस्की (1974) ने मानव कल्याण के बारे में निम्नलिखित मॉडल प्रस्तुत किया। उसने बताया कि किसी वस्तु के उत्पादन में श्रम, तकनीक तथा संसाधन की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

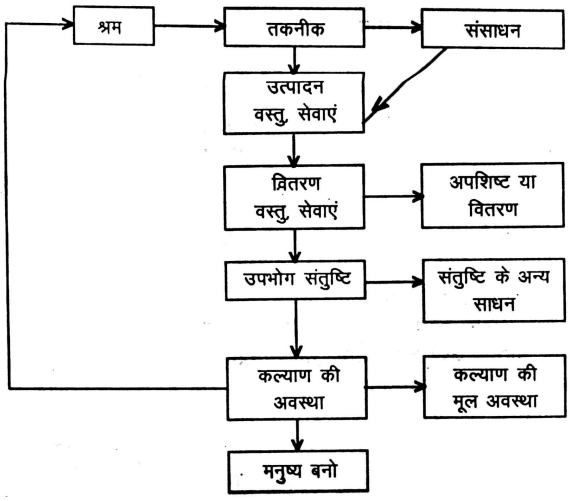

चित्र 5.1 : मानव कल्याण की व्युत्पत्ति (ड्रेवनोवस्की, 1974)

उत्पादन को सेवा माना गया है। अतः समाज में सेवाओं का समान वितरण अत्यावश्यक है। समाज का हर व्यक्ति उत्पादन से प्राप्त फल का समुचित उपयोग भी करे और फिर संतुष्ट भी हो। इस प्रकार समाजवादी भूगोल समाज के हर व्यक्ति को मनुष्य बनने तथा कल्याणकारी बनने पर जोर देता है। अतः यह कहा जा सकता है कि समाजवादी भूगोल जो कल्याण की भावना से ओत–प्रोत है।

भूगोल सामाजिक कल्याण के लिए निष्कर्ष ही प्रस्तुत नहीं करता बल्कि प्रत्यक्ष ज्ञान प्रस्तुत करता है जिसको आधार मानकर एक साधारण व्यक्ति भी समाज की भलाई के लिए योगदान दे सकता है। भूगोल की प्रवृत्तियों में समयानुसार परिवर्तन आता रहता है। सामाजिक कल्याण भूगोल में विश्व की समस्याओं के समाधान में भूगोल के योगदान को महत्व दिया जाने लगा है। एस.के. नाथ के अनुसार, कल्याणपरक भूगोल, भूगोल का वह अंग है जिसमें विभिन्न भौगोलिक नीतियों का समाज के कल्याण के लिए अध्ययन किया जाता है। हैण्डरसन जे.एम. (1958) के अनुसार, ''जन कल्याण भूगोल का उद्देश्य वैकल्पिक भौगोलिक प्रविधि द्वारा सामाजिक विकास करना है।''

सन् 1960 में भूगोल में मात्रात्मक क्रान्ति आई जिसके फलस्वरूप भूगोल में सामाजिक समस्याओं पर जनकल्याण से सम्बन्धित अनेक शोधों पर कार्य किया गया जिनमें सांख्यिकीय विधियां अपनाई गईं। 1970 के दशक में वैज्ञानिक क्रान्ति ने भूगोल में प्रवेश किया। ब्रिटिश विद्वान डी. एम. स्मिथ (1978) ने मानव भूगोल में कल्याणकारी पद्धति को अपनाया। इस दौरान अनेक भूगोलवेताओं ने समाज कल्याण में भूगोल के महत्व को उजागर किया। भूगोल की विषय वस्तु में सामाजिक आर्थिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक पर्यावरण आदि तथ्यों के स्थानिक प्रतिरूपों का अध्ययन किया जाने लगा। आज भूगोलवेता सामाजिक समस्याओं पर जनकल्याण विषयों पर ध्यान केन्द्रित कर रहे हैं वे निम्न लिखित हैं

(1) सामाजिक विषमता
(2) आर्थिक विषमता
(3) पर्यावरण प्रदूषण
(4) जनसंख्या की वृद्धि
(5) संसाधनों का उपयोग एवं दुरूपयोग
(6) निर्धनता एवं भुखमरी
(7) अशिक्षा एवं अज्ञानता
(8) जाति एवं वर्ग संघर्ष

विश्व में भूगोलवेता सामाजिक समस्याओं पर मानव कल्याण विषयों के साथ शोध प्रबन्ध पर अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। भूगोलवेता स्थानिक, प्रादेशिक तथा विश्वस्तर पर विषमताओं को कम करके मानव

कल्याण के लिए भौगोलिक पद्धतियों का उपयोग कर रहे हैं। रूसी विद्वान ड्रेवनोवस्की (1974) के अनुसार ''भूगोल हमें विश्व भाईचारे की शिक्षा देता है।'' भूगोल जातीयता, घृणा, विषमता जैसी कुरूतियों का अन्त करने वाला विज्ञान है जो सद्भाव, सहानुभूति तथा मानवीय गुणों पर जोर देता है। संक्षेप में हम कर सकते हैं कि सामाजिक विज्ञान के रूप में भूगोल भौगोलिक नीतियों का समाज के कल्याण पर संभावित प्रभाव का अध्ययन करता है।

REFERENCES:

1.Humboldt, A. Von (1845-1892) Kosmos, 5 volumes Stuttgart Cotta., London, H.G. Bohn.
2.Jamaes, P.e. (1972) All possible worlds: A hostory of geographical ideas Indianapolis: odessey press. U.S.A.
3.The changing nature of geograpphy, London, Hutchinson University, Library.
4.Tuan,Ui-fu(1971) Geography, phenomenology and study of human nature, the canadian geographer, vol-15
5.Wooldridge and East (1951) spirit and purpose of geography, London
6.Hussain, M. (2015) Evolution of geographical thought , Rawat pub, Jaipur, India.

Dr. Satyabir Yadav
Head, Department of Geography , Govt. Collegefor Women, Pali (Rewari).